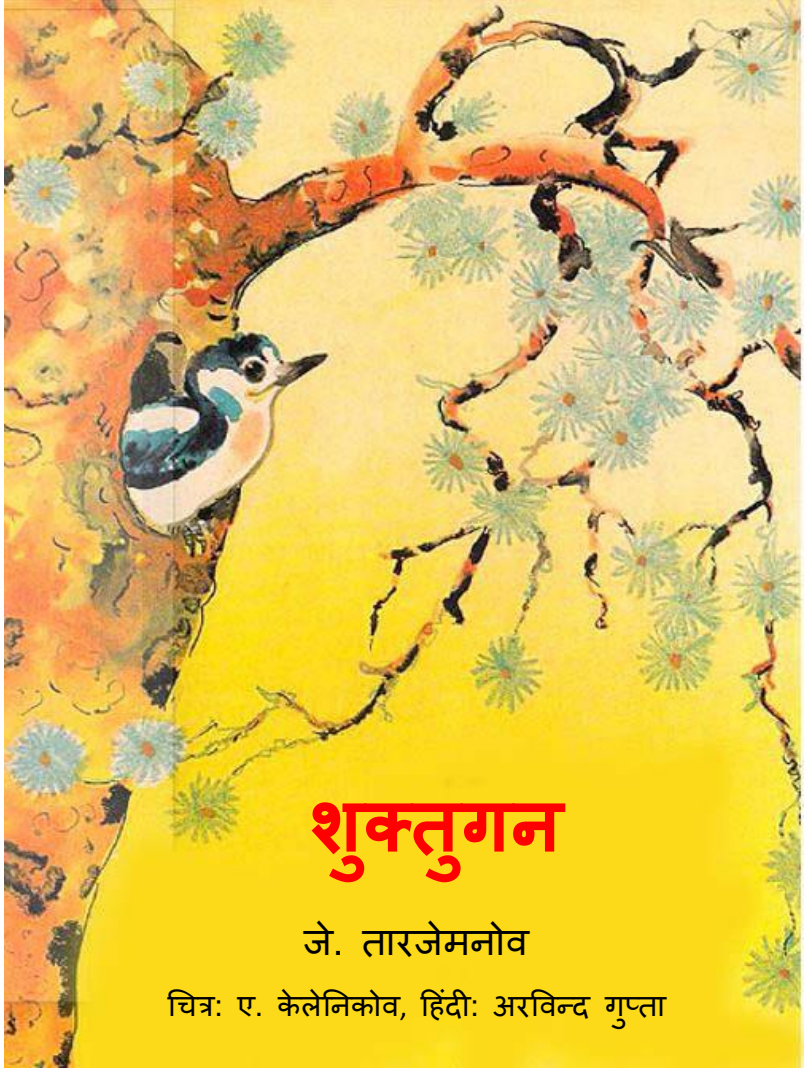

शुक्तुगन

जे. तारजेमनोव

चित्र: ए. केलेनिकोव, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

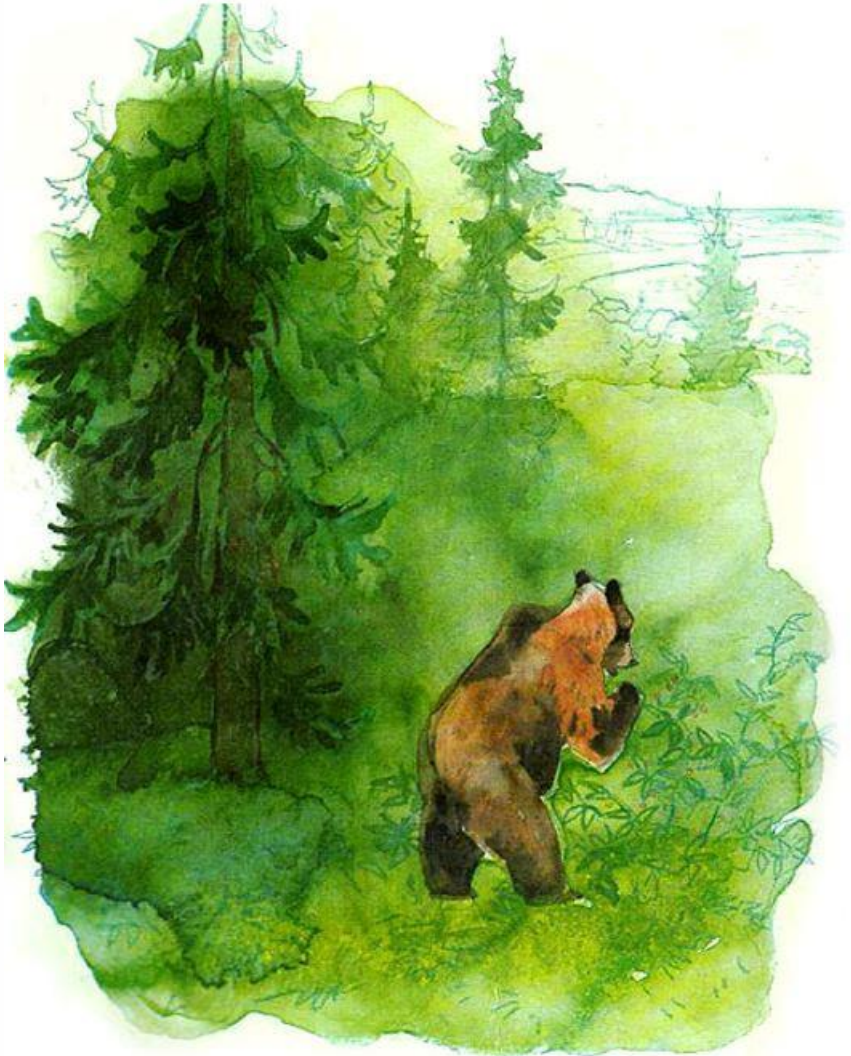

सूरज उग आया और धरती को गर्म करने लगा. जंगल में नीले, पीले और गुलाबी रंग के फूल खिले थे. एक व्यस्त छोटी मधुमक्खी उनके चारों ओर मंडरा और भिनभिना रही थी, जबकि तितलियां साफ हवा में कलाबाज़ी लगा रही थीं.

गिलहरी ने एक शाखा से दूसरी शाखा पर छलांग लगाते हुए, बीज इकट्ठा करने का अपना काम नए सिरे से शुरू किया था. लोमड़ी एक झाड़ी के पीछे खरगोश के इंतजार में लेटी थी. रसभरी के पेड़ों के बीच में एक बूढ़ा भालू जामुन से अपना पेट भर रहा था.

बूढ़ा टुक-टुक-बाबाई, झील के किनारे अपने ऊंचे देवदार के पेड़ पर जाग गया था. टुक-टुक-बाबाई एक तेज़, भारी चोंच वाला कठफोड़वा था और उसने अपना घोंसला इस पुराने देवदार के एक खोखले में बनाया था. सर्दी और गर्मी दोनों समय वही उसका घर था.

टुक-टुक-बाबाई का काम जंगल में पेड़ों की सेहत की देखभाल करना था. वो उनकी छाल को थपथपाता था, छाल खाने वाले कीड़ों को चोंच मारकर बाहर निकालता और कैटरपिलर इकट्ठा करता था.

टुक-टुक-बाबाई का छोटा पोता शुक्तुगन भी उसके साथ वहीं रहता था.

प्रत्येक सुबह टुक-टुक-बाबाई सूरज उगते ही काम पर लग जाता था और उसी समय चमगादड़ सोने के लिए घर चला जाता था. वो सावधानीपूर्वक पेड़ों का दौरा करता था. उनकी सेहत कैसी है यह जानने के लिए वो उनके तने को टैप करके देखता कि क्या उनकी लकड़ी और छाल, कीड़ों और कीटों से मुक्त थी.

बूढ़ा टुक-टुक-बाबाई शाम तक काम करता, जबकि उसका पोता शुक्तुगन पूरे दिन खेलता रहता था. शुक्तुगन एक शाखा से दूसरी शाखा पर कूदता, तितलियों का पीछा करता और छिपकलियों को डराता था. जब उसे बहुत गर्मी लगती थी तो फिर वो झील में नहाने चला जाता था.

और जब वो थक जाता या भूखा होता, तो वो पुराने देवदार के पेड़ के पास उड़कर घर आता था. रात का खाना हमेशा उसका इंतजार करता था, क्योंकि टुक-टुक-बाबाई अपनी चोंच में बेर और मोटे कैटरपिलर घर लाता था.

एक दिन ऐसा आया जब टुक-टुक-बाबाई चिंता और दुःख की स्थिति में जंगल से घर लौटा.

“हालात काफी ख़राब लग रहे हैं, बेटे. भृंगों और कैटरपिलरों की एक बड़ी पल्टन ने जंगल पर आक्रमण कर दिया है और वे संख्या में इतने सारे हैं कि मैं अकेले उनसे नहीं निपट सकता हूं. इसलिए अब तुम भी मेरे साथ काम में जुड़ जाओ, नहीं तो जंगल नष्ट हो जाएगा.”

"आपका क्या मतलब है, दादाजी?" शुक्तुगन ने आश्चर्य से पूछा, "वे छोटे भृंग और कीड़े पूरे जंगल को कैसे नष्ट कर सकते हैं?"

लेकिन शुक्तुगन ने अपने दादाजी के साथ ज़्यादा बहस नहीं की और वो लाइम और भोजपत्र (बर्च) के पेड़ों की जान बचाने के लिए उनके साथ निकल पड़ा.

उन्होंने शुरु में एक पुराना लाइम का पेड़ चुना. शुक्तुगन सहजता से बैठा, उसने अपनी पूंछ तने से चिपकाई और फिर उसने एक पुरानी शाखा पर दस्तक देना शुरू की, जिससे छाल के टुकड़े उड़ गए. टुक-टुक-बाबाई ने उसकी प्रशंसा की:

“बहुत अच्छे, शुक्तुगन! तुम वाकई में एक अच्छे लड़के हो!”

लेकिन शुक्तुगन बहुत जल्द ही काम से थक गया और शिकायत करने लगा:

“मैं थक गया हूं, मैं अब और नहीं काम कर सकता! मेरी चोंच दुख रही है, मेरी गर्दन दुख रही है... अब मुझे तैरने के लिए जाना है!”

"ठीक है, फिर," टुक-टुक-बाबाई ने सिर हिलाया, "झील तक उड़कर जाओ और वहां डुबकी लगाओ. लेकिन जल्दी वापस आना. हमें शाम तक इन कीड़ों से निपटना है."

शुक्तुगन प्रसन्न होकर अपनी शाखा से उतरा और फिर वो अपनी थकावट पूरी तरह भूल गया और तितलियों का पीछा करने लगा.

फिर वो इतने लंबे समय तक खेला कि अंत में वो सच में थक गया. फिर उसे भूख लगी, और वो अपने घर की ओर उड़ गया, जहां उसे कुछ जामुन मिले जिन्हें उसने चट कर डाला. और उसके बाद वो झील में तैरा, खोखले के घोंसले में वापस गया और गहरी नींद में सो गया.

बूढ़े टुक-टुक-बाबाई ने उसे जगाया.

“प्रिय बेटे, तुम वापस क्यों नहीं आए? देखो मैंने पूरे दिन अकेले काम किया, फिर भी मैं उन कीड़ों से नहीं निपट पाया. चलो, अंधेरा होने से पहले हम फिर से काम पर वापस चलें.”

शुक्तुगन ने फुसफुसाते हुए कहा, "फिर से छाल को ठोकने के लिए वापस..."

उसके बाद शुक्तुगन उस पुराने खंडहर की ओर उड़ गया जहां चमगादड़ रहता था. वहां वो एक झाड़ी के पीछे छिप गया और इंतजार करने लगा.

आख़िरकार रात हुई, चमकने वाले जुगनू जगमगाने लगे और चमगादड़ शिकार के लिए बाहर निकला. चमगादड़ बिना शोर किये जंगल के ऊपर से उड़ा. शुक्तुगन ने देखा कि अंधेरे में बिना किसी पेड़ से टकराए, चमगादड़ कितनी तेजी से कीड़ों को पकड़ता था. इसलिए वो उड़कर चमगादड़ के पास गया और उसने कहा:

"आप जितनी जल्दी हो सके मुझे अंधेरे में कीड़ों को पकड़ना सिखायें!“

“मैं कोशिश करूंगा,” चमगादड़ ने कहा, “लेकिन तुम्हारी चोंच का आकार ग़लत है. बेहतर होगा कि तुम छाल में कीड़ों की तलाश करो. और इसके अलावा, तुम्हारे पास मेरे जैसे कान भी नहीं हैं."

"लेकिन आपको इन बड़े कानों की आवश्यकता क्यों है?" शुक्तुगन ने पूछा.

"उससे से तुम्हारा क्या मतलब?" चमगादड़ ने कहा, "मैं पेड़ों के ऊपर उड़ते समय एक तेज़ सीटी बजाता हूं जो अंधेरे में तेज़ी से आगे जाती है. यदि वो किसी वस्तु, भृंग या पेड़ से टकराती है, तो मैं उसे तुरंत अपने संवेदनशील कानों से महसूस करता हूं. यदि वो कीड़ा होता है, तो मैं उसे तुरंत पकड़ लेता हूं. और अगर वो एक पेड़ या शाखा होती है, तो मैं अपना रास्ता बदल देता हूं."

"ठीक है, ठीक है," शुक्तुगन ने सोचा. "मैं भी वो करने की कोशिश करूंगा."

वह पेड़ों के ऊपर उड़ा, उसने एक चीख़ निकाली और उसकी प्रतिध्वनि सुनी. लेकिन उसे कुछ भी सुनाई नहीं दिया. और फिर वो अंधेरे में एक देवदार के पेड़ की चोटी से टकराया और गिर गया.

जब वो थोड़ा सम्भला तो शुक्तुगन भूखा-प्यासा घर की ओर उड़ गया.

जैसे ही वो पेड़ों के ऊपर से उड़ा, उसने खाई में नीचे एक मेंढक को निश्चल बैठे हुए देखा. वहां एक चींटी रेंग रही थी. मेंढक ने अपनी जीभ बाहर निकाली, उसने चींटी को निगल लिया और फिर से जमकर बैठ गया. तभी एक घोंघा आया. मेंढक ने फिर से जीभ बाहर निकाली और वो घोंघे को भी खा गया. फिर से मेंढक अपने अगले शिकार की प्रतीक्षा में बैठ गया.

शुक्तुगन ने सोचा, "मैं भी वो करने का प्रयास करूंगा."

उसने एक कुकुरमुत्ते पर एक घोंघा देखा. फिर उसने उसे अपनी जीभ से पकड़ने की कोशिश की. लेकिन वो पर्याप्त तेज़ नहीं था; घोंघा अपने खोल में छिप गया और फिर लाख कोशिश करने पर भी शुक्तुगन उसे बाहर नहीं निकाल पाया.

उसने मेंढक से पूछा कि वो इतनी तेजी से चींटियों और घोंघों को कैसे पकड़ता था.

“मैं वो इसलिए कर पाता हूं,” मेंढक ने कहा, “क्योंकि मेरी जीभ, तुम्हारी जीभ की तुलना में बहुत तेज, लंबी और चिपचिपी है. इसलिए चींटियों और घोंघों को छिपने का समय ही नहीं मिलता है.”

और इस प्रकार शुक्तुगन जो अबतक काफी बेहद भूखा था फिर आगे बढ़ गया.

तभी उसने एक दलदल के किनारे पर एक वुडकॉक को चलते हुए देखा. वुडकॉक अपनी लंबी चोंच को जमीन में धकेलता, एक पल सुनता और फिर एक मोटा कीड़ा या भुनगा ज़मीन से बाहर निकाल लेता था.

"मेरी चोंच भी लंबी है." शुक्तुगन ने सोचा, "शायद मैं भी वैसा ही कर सकूं."

इसलिए शुक्तुगन वुडकॉक के पास उतरा और उसने भी अपनी चोंच जमीन में घुसाई, लेकिन उसे कुछ नहीं मिला. उसकी चोंच को सिर्फ मिट्टी और गंदगी ही मिली.

"सुनो, वुडकॉक," शुक्तुगन ने पूछा, "मुझे बताओ कि तुम कीड़े और कीड़ों को कैसे ढूंढ लेते हो. मेरी चोंच भी लंबी है, लेकिन मैं कुछ भी नहीं पकड़ पाया."

“अहा,” वुडकॉक ने कहा, “मैं अपनी चोंच से यह सुन सकता हूं कि कीड़े और कीट धरती के नीचे कहां घूम रहे हैं. लेकिन तुम वैसा नहीं कर सकते. बताओ, क्या तुम वैसा कर सकते हो?”

"वो सही है," शुक्तुगन ने सोचा, "मैं जमीन के नीचे कीड़ों को नहीं पकड़ सकता. मेरे पास वुडकॉक जैसी चोंच नहीं है, जिससे मैं सुन सकूं कि जमीन के नीचे कीड़े कहां हैं. और मैं उड़ते हुए चमगादड़ की तरह कीड़ों को भी नहीं पकड़ सकता. और मैं अपनी जीभ से मेंढक की तरह गोली भी नहीं चला सकता हूं. इसलिए बेहतर होगा कि मैं पेड़ों को थपथपाने के लिए वापस जाऊं और छाल के नीचे छिपे भृंगों और कीड़ों को बाहर निकालूं, नहीं तो मैं भूखा ही रहूंगा."

और उसके बाद शुक्तुगन उड़कर घर गया.

वह अपने देवदार के पेड़ और उनकी झील के पास जा रहा था, लेकिन चारों ओर के पेड़ों में उसे कुछ अजीब सा लगा. पेड़ों की पत्तियां पीली पड़ गई थीं और मुड़ गई थीं, और भोजपत्र (बर्च) के पेड़ पूरी तरह से नष्ट हो गए थे. वहां न तो पक्षियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी, न ही झाड़ियों पर कोई पत्ता नज़र आ रहा था. वहां एक ख़रगोश तक के लिए भी छुपने के लिए जगह नहीं थी.

जंगल बिल्कुल शांत था. एकमात्र आवाज़ जमीन पर गिरे सूखे पत्तों की थी.

शुक्तुगन ने अपने दादाजी को खोजने के लिए चिल्लाना शुरू किया, लेकिन उसे कोई भी जवाब नहीं मिला. एकमात्र प्राणी जिसने उसकी चीख सुनी वो हाथी था.

"अरे, तुम किसके लिए चिल्ला रहे हो?" हाथी ने पूछा.

“मेरे दादाजी कहां हैं? सारे जानवर कहां चले गए हैं?”

“कीड़ों, कीटों और कैटरपिलर ने हमारे जंगलों पर हमला किया, और वे सारी पत्तियां खा गए, इसलिए जानवरों को जंगल छोड़ना पड़ा क्योंकि उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था, और छिपने के लिए भी कोई जगह नहीं थी. देखो, तुम्हारे दादाजी अन्य पक्षियों को बुलाने के लिए गए हैं कि वे यहां आएं और भृंगों और कैटरपिलरों से लड़ें. और शुक्तुगन, तुम इतनी देर से कहां थे, तुमने अपने दादाजी की मदद क्यों नहीं की?

शुक्तुगन ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन वो चुपचाप घर की ओर उड़ गया.

जैसे ही वो अपने देवदार के पेड़ के पास पहुंचा, अचानक उसकी नज़र टुक-टुक-बाबाई पर पड़ी, जो सभी प्रकार के पक्षियों, टिट्स, चिफ-चैफ, नटचैच और फ्लाई-कैचर्स के एक बड़े झुंड के साथ खड़े थे.

फिर अचानक जंगल में जान आ गई. कठफोड़वों ने छाल को थपथपाना और कीड़ों और भृंगों को खोदना शुरू कर दिया. जब उनका काम ख़त्म हो गया तो टिट्स चीख़ते हुए उड़े, यह जांचने के लिए कि वहां छाल खाने वाले भृंग तो नहीं छुपे थे जो गलती से बच निकले हों. नटचैच सभी पेड़ों पर उलटे चढ़े और उन्होंने गहरी दरारों से बोर-बीटल्स को बाहर खींचकर निकाला. चिफ़-चफ़ और फ्लाई-कैचर्स इधर-उधर उड़ते रहे, शाखाओं और पत्तियों से कैटरपिलर उठाते रहे.

टुक-टुक-बाबाई ने शुक्तुगन को देखा और वे चिल्लाए:

"यहां आओ, और जंगल बचाने में हमारी मदद करो!"

शुक्तुगन उड़ा और वो टुक-टुक-बाबाई के बगल वाली शाखा पर उतरा. उसने अपनी पूंछ पेड़ से सटा दी और अपनी चोंच से छाल को थपथपाना शुरू कर दिया. उसने एक छाल खाने वाले भृंग को निकाला और उसे खाया, और वो इतना अच्छा था कि उसने तुरंत दूसरे को भी बाहर निकाला और वो उसे भी खा गया.

पक्षियों ने दिन भर काम किया. इसलिए शाम तक जंगल में एक भी हानिकारक बीटल या लालची कैटरपिलर नहीं बचा.

और फिर सुबह भोजपत्र (बर्च) पेड़ों में फिर से जान आई, और हवा उनके हरे पत्तों में फिर से बहने लगी. तितलियां वापस फूलों पर मंडराने लगीं, और खरगोश मैदान में खेलने और कलाबाज़ी दिखाने के लिए वापस आ गए.

मां-भालू अपने बच्चों को नहलाने के लिए झील पर लाई, और साही ने अपने कांटों का उपयोग करके अपने बच्चों के नाश्ते के लिए एक बड़ा मशरूम घर ले गई.

"ठीक है," तुक-तुक-बाबाई ने शुक्तुगन से कहा, "अब तुम काफी बड़े हो गए हो. भोजन कैसे प्राप्त करें वो तुमने सीख लिया है. पेड़ों को कैसे ठीक करना है वो भी काम तुम सीख गए हो. अब से हम मिलकर कीटों की तलाश करेंगे और जंगल की देखभाल करेंगे."